हिन्दी - पुष्प

(साउथ एशिया टाइम्स का हिन्दी परिशिष्ट)

वर्ष-६ अङ्क-१२ जूलाई, २०१०

सम्पादकीय

लालच बुरी बला है

८० के दशक में अमेरिका में एक आंदोलन का आरम्भ हुआ था, जिस का मुख्य नारा था -'लालच करना अच्छा है' इस आंदोलन का अँग्रेज़ी फ़िल्म 'वाल स्ट्रीट' में 'गेक्को' की भूमिका में अच्छा प्रतिनिधित्व किया गया था। इस आंदोलन के समर्थकों का मत था कि हर व्यापार के पीछे लाभ का लालच होता है। जितना अधिक कोई व्यापारी लालच करेगा, उतना अधिक वह अपने व्यापार को बढ़ाने तथा अधिक लाभ कमाने का प्रयत्न करेगा, जो अमेरिका तथा विश्व की आर्थिक व्यवस्था के लिये अच्छा होगा। इस सिद्धांत को ध्यान में रखते हुए, बैंक तथा अन्य आर्थिक संस्थाएँ अधिक ब्याज मिलने की आशा में लोगों को मकान ख़रीदने के लिये अंधाधुंध कर्ज़ देने लगीं। अधिक कमीशन मिलने के लालच में, इन संस्थाओं के प्रतिनिधि ऐसे व्यक्तियों को को ऋण देने लगे जो ऋण की राशि तो छोड़िये, नियमित रुप से ब्याज का भुगतान करने की स्थिति में भी नहीं थे। परिणाम स्वरूप, मकानों की कीमत में भारी गिरावट आई और कई आर्थिक संस्थाएँ तथा बैंक दिवालिया हो गये। अमेरिका की आर्थिक व्यवस्था, सम्पूर्ण विश्व की अर्थ-व्यवस्था से गहनतम रूप से जुड़ी हुई है। इसलिये, इस का प्रभाव न केवल अमेरिका पर बल्कि पूरे विश्व की आर्थिक व्यवस्था पर हुआ और विश्व एक गहरे आर्थिक संकट में फँस गया, जिस से उबरने के लिये करदाताओं को भारी भुगतान करना पड़ा। आज भी विश्व इस संकट से पूरी तरह नहीं उबरा है। पर कम से कम लोगों की समझ में आ गया है कि बहुत लालच करना अच्छा नहीं है। लालच बुरी बला है।

हिन्दी-पुष्प के इस अङ्क में विविध विषयों पर कुछ रोचक कविताएँ हैं। इसके अतिरिक्त, गुरु-पूर्णिमा से सम्बन्धित लेख हैं और 'पदोन्नति' नामक कहानी का सातवाँ भाग है। साथ में 'अब हँसने की बारी है' तथा 'सूचनाएँ' स्तम्भ भी हैं। आशा है आपको यह अङ्क पसंद आएगा। आपके विचारों, सुझावों तथा रचनाओं का हम स्वागत करेंगे।

-दिनेश श्रीवास्तव

प्रकाशन सम्बंधी सूचनाए

हिन्दी-पुष्प का उद्देश्य ऑस्ट्रेलिया में हिन्दी का प्रचार-प्रसार करना है। प्रकाशित रचनाओं पर कोई पारिश्रमिक नहीं दिया जाता है। हिन्दी-पुष्प में प्रकाशित रचनाओं में लेखकों के विचार उनके अपने होते हैं, उनके लिये सम्पादक या प्रकाशक उत्तरदायी नहीं हैं। हस्तलिखित रचनाएँ स्वीकार की जाएँगी परन्तु इलेक्ट्रानिक रूप से 'हिन्दी-संस्कृत' फ़ंट में रचनाएँ भेजें तो उनका प्रकाशन हमारे लिए अधिक सुविधाजनक होगा।
कृपया अपनी रचनाएँ (कहानियाँ, कविताएँ, लेख, चुट्कुले, मनोरंजक अनुभव आदि) निम्नलिखित पते पर भेजें-

Editor, Hindi-Pushp, 141 Highett Street, Richmond, Victoria 3121).
ई-मेल से रचनाएँ भेजने का पता है -
dsrivastava@optusnet.com.au

अपनी रचनाएँ भेजते समय, अपनी रचना की एक प्रतिलिपि अपने पास अवश्य रखें।

काव्य-कुंज

बदलाव

- रेखा राजवंशी, सिडनी

पिंजरे के तोते
'बजी' बन गए
बाँसुरी के सुर सज गए
'डिजरी डू' में

गुलमोहर सिमट गए
'बॉटलब्रश' की झाड़ियों में
और जाने कब
क़ैद हो गए
दीवाली व ईद
सप्ताहांत में

जाने कैसे बदल गई
वक़्त की परिभाषा
घड़ी की सुई की
टिक्-टिक् से बंध गई
रिश्तों की आशा

दिल्ली का इंडिया गेट
बन गया 'डार्लिंग हार्बर'
गंगा और यमुना
बनने लगीं
'हाक्सबरी' और 'यारा रिवर'

बदलाव की इस प्रक्रिया में
बहुत कुछ बदला
पर ऐसा भी बहुत कुछ है
जो बिल्कुल नहीं बदला

नहीं बदली लोगों की आस्था
न बदला मन का विश्वास
न बदला पूजा का रूप
न बदला मंदिर का प्रसाद

कंगारुओं के देश में
बार-बार मन ढूँढता रहा
ग़लती पर पिता की डाँट
चलते समय का आर्शीवाद
घर की मसालेदार चाय
और अचार का स्वाद

इस बदली जीवन धारा में
सवाल नहीं है
कुछ पाने या खोने का
सवाल नहीं है
कुछ होने या न होने का
सवाल बदलाव से न हारने का है
सवाल बदलाव को स्वीकारने का है

'बज्जी' - ऑस्ट्रेलियाई भाषा में पक्षी
'डिजरी डू' - ऑस्ट्रेलियाई आदिवासियों का एक संगीत वाद्य-यंत्र

एक ग़जल

- फ़रीदा लखानी, सिडनी

दयार-ए-इश्क़ का
हर रास्ता खुला रखना,
हज़ार ख़ार हों पर
गुल का आसरा रखना;
नज़र में कम नज़र का
न सिलसिला रखना,
उसे गवाँ के भी
जीने का हौसला रखना;
किसी से कहने लगो
दिल की बात जब खुल कर,
तो उस के चेहरे पे
आँखों को भी गड़ा रखना;
न भूल कर भी
किसी दोस्त को ख़फ़ा रखना,
बहुत है वक़्त की तंगी
मोहब्बतों के लिये
कभी जफ़ाओं से होना
न मुज्महिल फ़राह,
तुम अपने पेश-ए-नज़र
अज़मत-ए-वफ़ा रखना

नोटइ दयार = शहर, प्रवेश द्वार;
ख़ार = काँटे;
जफ़ाओं = अविश्वास, विश्वासघात;
मुज्महिल = कमज़ोर, दुखी

ज़िन्दगी

-राजेन्द्र चोपड़ा, मेल्बर्न

किसी ने कह दिया
ज़िंदगी ग़म का दरिया है
जीना मुश्किल हर लम्हा है
या ज़िंदगी ग़मों का पहाड़ है
यहाँ भले-मानसों का जीना दुश्वार है

किसी ने सोच कर बतलाया
ज़िंदगी आप के हाथ में है
जो चाहो बना सकते हो
चाहो तो प्यार के पुल बना कर
गहरी खाइयों को पार कर सकते हो

किसी ने कुछ इस तरह समझाया
ज़िंदगी रॉकेट नुमा और आप इंजन हैं
मेहनत का ईंधन डाल कर
पहाड़ क्या धरती से पार जा कर भी
चाहो तो नई दुनिया बसा सकते हो

किसी ने बतलाया
हदें और मुल्कों में ज़मीन को काट कर
इन्सान को मज़हबों में बाँट कर
दीन या मज़हब के नाम पर
दूसरों की ज़िंदगी कैसे ले सकते हो

किसी पंडित किसी उलमा ने कहा
ख़ुद-ही की नाव ख़ुद-ही खेवट
ख़ुद-ही ने गुनाहों से भर डाली
फिर बीच मझधार डूबने पर
ज़िंदगी देने वाले को
कैसे दोष दे सकते हो

मत कोस ज़िंदगी को, बन कर पोस्ती
ज़िंदगी है ख़ूबसूरत कर ज़िंदगी से दोस्ती
वह जीना भी क्या,
यदि मर मर के जिया
या सदा औरों को लूट मार कर जिया
ऐसे इन्सान को ईश
तुम कैसे क्षमा कर सकते हो

सूर्यास्त

- हेमानी किरण, मेल्बर्न

क्षितिज पर छाई लाली
दुल्हन के सिंदूर सी,
बह गयी चारों ओर महक कस्तूरी की,
मृग वंद कुलाँचे भर भागे,
हृदय में मधुर अरमान जागे,
पक्षी सब उड़ चले अपने आशियानों को

लिए दिवस भर की घटनाएँ
दिल बहलाने को
वसुंधरा लगे खोई-खोई यादों सी
नींद आने लगी कमल-कुंज को भी
सूरजमुखी की स्वर्ण-पाँखुरी भी
अब लगी सुस्ताने
मंद-मंद बहती अनिल
सब को लगी सहलाने
सागर में डूबता सूरज,
ले गया साथ जगत की धड़कन
निशा को ओढ़े काला कंबल,
तारों की पहने अचकन
ध्वनि-रहित आकाश करता है
मन को चंचल
आह! क्या मिठास है इस सूर्यास्त में
किसी का कल कष्टदायक है,
किसी के मधुर सपने
पर कष्टदायक भविष्य के साथ
भी ये आनंददायक है
क्योंकि ये शाम का अनुभव तो है,
पर हर बार नव-अनुभव है।

Trial version www.scansoft.com

गुरु पूर्णिमा

-रमेश दवे, मेल्बर्न

अषाढ़ मास की पूर्णिमा को गुरु पूर्णिमा का उत्सव मनाया जाता है। इस वर्ष यह उत्सव रविवार, २५ जुलाई को मनाया जायेगा, जब शिष्य अपने-अपने गुरुओं की पूजा करेंगे, उन्हें अपने श्रद्धा-सुमन अर्पित करेंगे और गुरु-दक्षिणा देंगे। इस अवसर पर गुरु की सतत-सेवा का विशेष महत्व माना जाता है। भारतीय संस्कृति में गुरु-शिष्य की परम्परा बहुत पुरानी है। वैसे तो, गुरुकुल की शिक्षा-पद्धति अब लगभग समाप्त हो चुकी है परंतु संगीत, चित्रकला तथा आध्यात्मिक क्षेत्र में, यह परम्परा आज भी जीवित है। आध्यात्मिक क्षेत्र में, भारत के कई गुरु विश्व प्रसिद्ध हैं, उदाहरण के लिये गुरु वशिष्ठ, वाल्मिीक, समर्थ गुरु रामदास आदि आदि। इस अवसर पर विश्व भर में विभिन्न गुरुओं के शिष्य धूम-धाम से गुरु-पूर्णिमा का उत्सव मनायेंगे। भारतीय संस्कृति मे माता-पिता के बाद गुरु का ही स्थान महत्वपूर्ण माना गया है। हमारे शास्त्रों में गुरु महिमा का यह श्लोक बहुत प्रसिद्ध है-

अज्ञान, तिमिरांधस्य ज्ञानांजन शलाकया
चक्षु उन्मीलितं ये न तस्मै श्री गुरुवे नमः

अर्थात्, उस गुरु को नमन है जो अज्ञान के अंधेरे में ज्ञान का अंजन लगा कर हमारा मार्ग-दर्शन करता है। परंतु अच्छे गुरु का मिलना आसान नहीं है। आजकल बहुत से लोग भगवा वस्त्र पहन कर गुरु होने का ढोंग रचाते हैं। उनका उद्देश्य भोली-भाली जनता को लूटना होता है। मामूली गुरुओं की बात तो छोड़िये, गुरु द्रोणाचार्य तक ने स्वार्थ के वशीभूत हो कर एकलव्य से बिना उसे शिक्षा दिये, उस से दक्षिणा स्वरूप उसका दाहिना अँगूठा माँग लिया था ताकि वह कहीं धनुर्विद्या में उनके प्रिय शिष्य से आगे न निकल जाये। आज के धूर्त गुरु तगड़ी दक्षिणा ही नहीं लेते बल्कि अपने चेले को लूटने के ही चक्कर चलाते रहते हैं। अच्छा गुरु काम, क्रोध, लोभ, मद और मोह से मुक्त होता है और वह जितेन्द्रिय होता है। विशेष तौर पर जीभ उसके वश में होती है। वह गाली-गलौज कभी नहीं करता है। उसके व्यक्तित्व में एक विशेष प्रकार का आकर्षण होता है। उसे वेद-उपनिषद आदि ग्रन्थों का पर्याप्त ज्ञान तथा गंभीर साधना का अनुभव होता है। आज के युग में ऐसे गुरु दुर्लभ हैं, फिर भी आपका परम सौभाग्य है यदि आप ऐसे किसी व्यक्ति के सम्पर्क में आएँ। बेहतर यह है कि आप वेद-शास्त्रों को ही अपना गुरु मान लें जो आपका सही मार्ग-दर्शन करेंगे। वरना दुनिया में 'लव गुरु' जैसे धूर्तों की कमी नहीं है, जो आपको तेज़ी से पतन के मार्ग पर ले जायेंगे।

मेरे गुरु सोमदत्त

-सुभाष शर्मा, ग्लैडस्टन, क्वींसलैंड

गुरु-पूर्णिमा के अवसर पर, मैं अपने पुराने विद्यालय के अध्यापक, सोमदत्त जी को श्रद्धा-सुमन भेंट करना चाहूँगा, जिन्होंने मेरे भीतर जो ज्ञान की ज्योति जलायी और मुझे जो प्रोत्साहन दिया, उसी की वजह से मैं उन्नति के उस शिखर पर पहुँचा, जहाँ मैं आज हूँ। एक बार मेरे अध्यापक ने कक्षा में सभी विद्यार्थियों से पूछा था कि वे भविष्य में क्या बनना चाहेंगे। मैंने उत्तर में कहा था - वैज्ञानिक। मैं आज सोमदत्त जी की कृपा से एक इंजीनियर के अलावा वैज्ञानिक भी हूँ। सोमदत्त जी ने मेरे जीवन में एक अमर छाप छोड़ी है। मुझे उन से ही यह ज्ञान मिला कि वैज्ञानिक क्या होता है वरना मैं इंजीनियर को ही वैज्ञानिक समझता था।

सोमदत्त जी ने एक बार बहुत तंग किया। उन्होंने मुझ से कहा एक वादविवाद प्रतियोगिता में भाग लो। विषय था- "भारत की तटस्थ नीति ही भारत को उन्नति के शिखर पर ले जा सकती है"। मैं बार-बार तटस्थ शब्द के उच्चारण में ग़लती कर देता था। मुझे गुस्सा आता था कि वह अपने साले से इस प्रतियोगिता में भाग लेने को क्यों नहीं कहते हैं; पढ़ने में तो वह भी अच्छा है। जब पता है कि मैं नहीं कर सकता तो मेरे पीछे क्यों पड़े हैं।

मैं रो दिया था और मैंने कहा था कि मैं इस प्रतियोगिता में भाग नहीं लूँगा। इस पर उन्होंने मुझे डाँट लगाई थी और कहा था - "मैं इतने वर्षों से पढ़ा रहा हूँ; मुझे पता है कौन सा दीपक रोशनी देता है; इस प्रतियोगिता में तुम ही भाग लोगे। अब मेरे पास कोई और उपाय न था। मैंने प्रतियोगिता में भाग लिया और जब डर से भूल गया कि आगे क्या कहना है तो जैसा उन्होंने रट कर बोलने को कहा था मैंने वही उगल दिया - "मैं डंके की चोट पर कह सकता हूँ कि भारत की तटस्थ नीति ही भारत को उन्नति के शिखर पर ले जायेगी"। लोग ज़ोर-ज़ोर से ताली बजाने लगे। मैं प्रतियोगिता में जीत नहीं पाया पर सोमदत्त जी ने मुझे बिल्कुल हताश नहीं किया। मैं बहुत चकित हुआ कि उन्होंने मुझे बिल्कुल नहीं डाँटा। इस तरह उन्होंने दीपक में प्रोत्साहन की जो ज्योति जलाई, वह बराबर जलती रही। उसके बाद, मैंने अनेकों वादविवाद प्रतियोगिताएँ जीतीं और मैं इतना प्रोत्साहित हुआ कि मैंने इसी बलबूते पर विश्वविद्यालय की यूनियन के उपसभापति का चुनाव लड़ने की ठानी और मेरे भाषण इतने लोकप्रिय हुए कि उन्हें सुनने के लिये लोग काम छोड़-छोड़ कर आने लगे। मैं चुनाव हार गया पर मैंने हिम्मत नहीं हारी। सोमदत्त जी का आर्शीवाद समझ कर मैंने भाषण देना जारी रखा। बाद में मैंने कई चुनाव लड़े और विजयी भी हुआ।

आज भी मैं अपने बच्चों को सोमदत्त जी का किस्सा सुना कर प्रोत्साहित करता हूँ। मेरे बच्चों ने जब अँग्रेज़ी वादविवाद प्रतियोगिता में विजय प्राप्त की तो मुझे अपने गुरु सोमदत्त जी की याद आयी। अगर उन्होंने दीपक में ज्योति न जलायी होती तो मेरे जीवन में इतना प्रकाश न हुआ होता। मैं उन्हें शत-शत नमस्कार करता हूँ।

पदोन्नति* (भाग ७)

-श्रीनिवास वत्स

(आपने इस कहानी के पिछले भागों में पढ़ा कि पदोन्नति के बाद, अन्य सरकारी अधिकारियों को देख कर, सुनन्दनजी को लगा कि कुत्ता पालना बड़प्पन की निशानी है। गाँव से शहर लौटते समय सुनन्दन को गाँव की गली में एक सुंदर कुतिया दिखायी दी, जिसे वे अपने साथ ले आये। उन्होंने सोचा कि वह गाँव की कुक्करी है, जैसा रूखा-सूखा वे देंगे, खा लेगी। पर उसे (मिसेज़ फ़्लूडी को) बंधन रास नहीं आया और वह रात भर चिल्लाती रही। मकान-मालिक ने साफ़ कह दिया कि यदि इस कुतिया को रखना है तो मकान बदल लो। सुनंदन जी घर में बढ़ते अप्रत्याशित ख़र्च से वैसे ही परेशान थे, उन्होंने बिट्टू से कहा-"दिवाकर को साथ लेकर इसे स्कूटर पर वापस गाँव छोड़ आओ।" लीजिये, अब आगे की कहानी पढ़िये - सम्पादक)

घर के सभी सदस्य मिसेज़ फ़्लूडी को विदा करने का मन बना चुके थे। लेकिन सप्ताह-भर साथ रहने के कारण कुक्कुरी ने उनके हृदय के किसी कोने में स्थान बना लिया था। सुबह तो यह चली ही जाएगी, यह सोच कर सबने रात को बड़े प्यार से भर-पेट भोजन खिलाया। सुभद्रा जी ने दूध में शरबत मिलाकर पिलाया। सुनंदन ने एक पुरानी रजाई का बिछौना बनाकर कमरे में इस ढंग से रखा कि कुतिया उस पर आराम से बैठ सके और सर्दी लगने पर उसमें छिप सके।

अगली सुबह जब सुनंदन जी सोकर उठे तो चकित रह गए। कमरे में फ़्लूडी ही नहीं, उसके आसपास चार नवजात पिल्ले भी घूम रहे थे।

फ़्लूडी के प्रसव का समाचार सुनकर घर के सभी सदस्य एकत्र हो गए। बिट्टू बोला-"पापा! अब इतने सारे कुक्कुर स्कूटर पर गाँव नहीं जा सकते।

इनके लिए कोई टेम्पो करना होगा।" सुनंदन जी सोचते रहे - यह तो बहुत महँगा पड़ेगा।

दिन में यह ख़बर पूरे मोहल्ले में फैल गई कि सुनंदन के यहाँ कुतिया ने चार बच्चों को जन्म दिया है। श्रीमती रस्तोगी ने पिल्लों को देखा तो खुश होकर बोलीं-"सुभद्रा जी! इस काले पिल्ले को बड़ा होने पर हमें दे देना। देखो तो, कितना आकर्षक है।"

(क्रमश:)

*भारत-संदर्श के सौजन्य से

महत्वपूर्ण तिथियाँ

११ जुलाई (विश्व-जनसंख्या-दिवस), १३ जुलाई (रथ-यात्रा), १५ जुलाई (धर्म चक्र-परिवर्तन अर्थात् महात्मा बुद्ध के सर्वप्रथम धर्मोपदेश की जयंती), २२ जुलाई से ८ अगस्त तक (मेल्बर्न अंतर्राष्ट्रीय फ़िल्मोत्सव), २३ जुलाई (सिक्खों के ८वें गुरु का जन्म दिवस), २५ जुलाई (गुरु पूर्णिमा), २६ जुलाई (बुद्ध अनुयायियों का धर्म-दिवस तथा मुसलमानों के 'लैलात उल बाराह' अथवा क्षमा-पक्ष का आरम्भ), २ अगस्त (रमज़ान का आरम्भ), १५ अगस्त (भारतीय स्वतंत्रता दिवस), २३ अगस्त (गणेश चतुर्थी), २४ अगस्त (रक्षाबंधन)।

सूचनाएँ

१. संगीत-संध्या (शनिवार, ७ अगस्त)
स्थान - वेवर्ली मेडोज़ प्राइमरी स्कूल, ह्वीलर्स हिल, मेलबर्न (मेलवे संदर्भ ७१ जी ११)
समय - रात के ८.०० बजे से १० बजे तक। प्रवेश निःशुल्क है।
अधिक जानकारी के लिए राधेश्याम गुप्त जी को (०३) ९९४६ २५९५ अथवा (०४०२)०७४२०८ पर फ़ोन कीजिए अथवा निम्नलिखित वेबसाइट देखिये -
http://www.sharda.org/Events.htm

२. पंडित शिव कुमार शर्मा (संतूर) और पंडित हरिप्रसाद चौरसिया (बाँसुरी) का संगीत कार्यक्रम
स्थान तथा तिथि - बॉक्स हिल टाउन हॉल, मेल्बर्न (१३ अगस्त)
सेंट जॉन क्लैन्सी ऑडिटोरियम सिडनी (१५ अगस्त)
अधिक जानकारी के लिये, फ़ोन कीजिये - (०२) ८०६५ ९५९०
अथवा निम्न वेबसाइट देखिये-
www.iwannaticket.com.au

३. श्री संकट मोचन महोत्सव - २०१० (शनिवार, २२ अगस्त)
स्थान - डेरेबिन आर्ट्स् ऐण्ड कल्चर सेन्टर,
बेल स्ट्रीट तथा सेंट जार्ज स्ट्रीट का नुक्कड़, (मेलवे संदर्भ ३० ई-१)
समय - दोपहर के २.०० बजे से शाम के ६.०० बजे तक। प्रवेश निःशुल्क है।
महोत्सव के आयोजन में आर्थिक अथवा अन्य प्रकार की सहायता करने के लिये श्रीमती विनीता भाटिया से (०४१२)७७१७७९ पर तथा अन्य जानकारी के लिए डॉक्टर सुनीला श्रीवास्तव को (०४२७) २७४४६२ पर फ़ोन कीजिये अथवा निम्नलिखित पते पर ई-मेल द्वारा संपर्क कीजिये -ashriv@gmail.com

अब हँसने की बारी है

१. डॉक्टर और मरीज़

मरीज़ (डॉक्टर से) - डॉक्टर साहब, क्या आप मेरी बीमारी का पता लगा सकते हैं?
डॉक्टर (क्रोधपूर्वक) - हाँ, तुम्हारी आँखें बहुत कमज़ोर हैं।
मरीज़ (डॉक्टर से) - आपको कैसे पता चला?
डॉक्टर (मरीज़ से) - बाहर बोर्ड पर साफ़-साफ़ लिखा है - 'जानवरों का डॉक्टर', जो तुम नहीं पढ़ पाये।

२. दो आतंकवादी

पहला आतंकवादी (दूसरे से) - हम इस कार में बम फ़िट तो कर रहे हैं। यदि कहीं फ़िट करते समय बम फट गया तो?
दूसरा आतंकवादी (पहले से) - तो क्या हुआ, हमारे पास दूसरा बम भी तो है।